चित्त गृहपति

(धर्मकथिकों में 'अग्र')

एवं

हत्थक आळवक

(चार संग्रह वस्तुओं से परिषद का संग्रह करने वालों में 'अग्र')

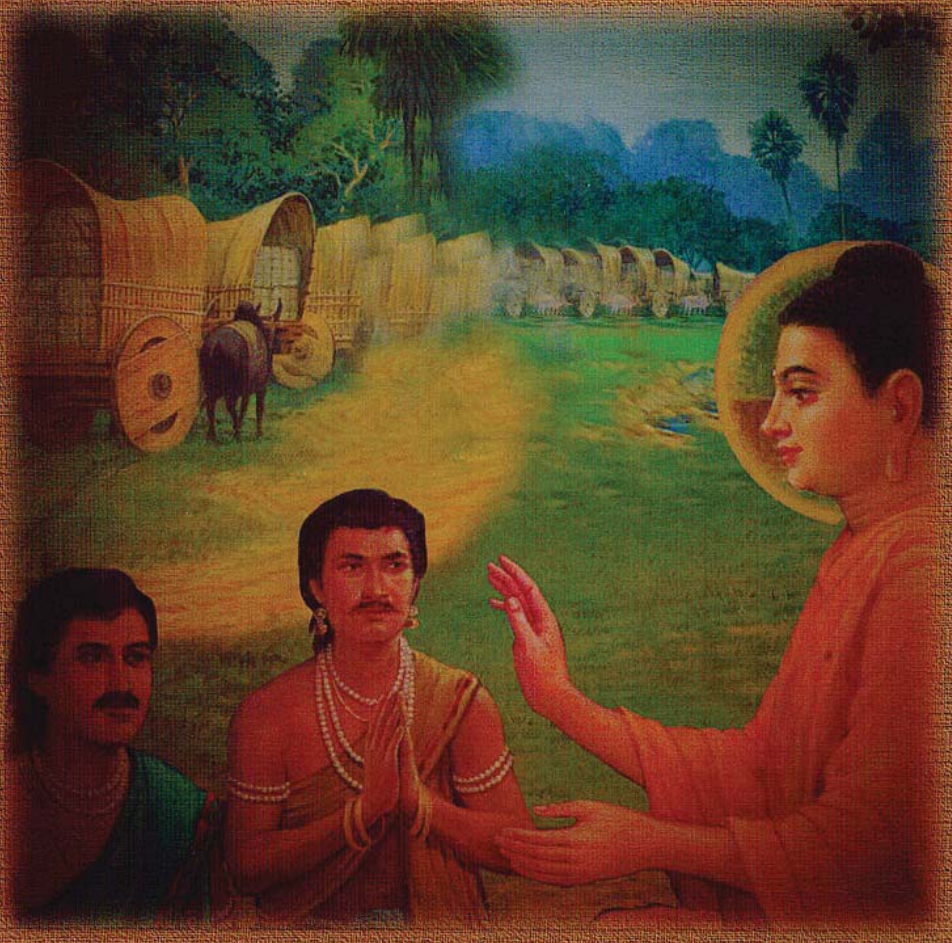

विपश्यना विशोधन विन्यास

भगवान बुद्ध के अग्रउपासक

चित्त गहपति

(धर्मकथिकों में 'अग्र')

एवं

हत्थक आळवक

(चार संग्रह वस्तुओं से परिषद का संग्रह करने वालों में 'अग्र')

विपश्यना विशोधन विन्यास

धम्मगिरि, इगतपुरी

भगवान बुद्ध के अग्रउपासक

विषयानुक्रमणिका

खंड (१)

चित्त गहपति

प्रकाशकीय [v]

भवसंसरण १

भगवान गोतम बुद्ध काल १
शास्ता से साक्षात्कार ३

धर्मकथिक चित्त गहपति ५

छंद-राग ही बंधन है ५
आयुष्मान कामभू ६
आयुष्मान गोदत्त को स्पष्टीकरण ७
श्रद्धा से ज्ञान ही श्रेष्ठ है ८
अचेल काश्यप को अर्हत्व प्राप्ति ९

धर्मजिज्ञासु चित्त गहपति ११

तीन प्रकार के संस्कार ११
धातु-नानात्व (धातुओं की विभिन्नता) १२
सत्कायदृष्टि से मिथ्या-दृष्टियां १३

अन्य प्रसंग १५

महक द्वारा ऋद्धि प्रदर्शन १५
चित्त गहपति की मृत्यु १६
अतीत कथा १७
बोधिसत्त्व का संग १८

खंड (२)

हत्थक आळवक

वर्तमान कथा २३
आळवक यक्ष २४
भगवान द्वारा आळवक यक्ष का दमन २४
'हत्थक' नामकरण २७
चार संग्रह-वस्तुएं २९
अल्पेच्छता ३०
वीतराग सुख से सोता है ३१
अतृप्त हत्थक-देवपुत्र ३३
अतीत कथा ३४

परिशिष्ट (१)

तीनों संस्कार निरुद्ध ३५

प्रकाशकीय

भव-मुक्ति के लिए निरंतर साधना कर सकने की सुविधा एक गृही की अपेक्षा गृहत्यागी को अधिक होती है परंतु सभी लोग घर-बार नहीं छोड़ सकते। भगवान बुद्ध के समय जिनके पास पूर्वजन्मों की निष्क्रमण-पारमी पर्याप्त मात्रा में थी, वे ही गृहत्याग कर, प्रव्रजित हो, भगवान की शिक्षा का शीघ्र लाभ उठाते थे। अन्य लोग गृही रहते हुए यथाशक्ति धर्म का जीवन जीते थे। जितने लोग गृहत्यागी हुए थे, उनकी तुलना में भगवान के गृही शिष्य कहीं अधिक संख्या में थे। भगवान का सिखाया हुआ धर्म – शील, समाधि, प्रज्ञा का अष्टांगिक मार्ग – सबके लिए एक समान था।

भगवान के अनेक गृहस्थ शिष्यों ने धर्म की ऊँची अवस्थाओं को प्राप्त किया तथा दूसरों के समक्ष एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया। चित्त गहपति तथा हत्थक आळवक भगवान के ऐसे ही गृहस्थ उपासक थे जिन्होंने धर्म का रस चख अनागामी अवस्था का साक्षात्कार किया। भगवान ने इनकी प्रशंसा करते हुए कहा – "श्रद्धावान उपासक को यदि आकांक्षा करनी हो तो यही आकांक्षा करनी चाहिए – 'मैं ऐसा ही बनूं जैसे चित्त गहपति एवं हत्थक आळवक।' यही तुला है, यही प्रमाण है मेरे उपासकों के लिए, जैसे ये हैं – चित्त गहपति तथा हत्थक आळवक।"

भगवान के शिष्यों में भिक्षुओं में आयुष्मान पुण्ण मन्ताणिपुत्त, भिक्षुणियों में धम्मदिन्ना तथा गृहस्थों में चित्त गहपति धर्मकथिकों में अग्र थे।

बुद्धवाणी में चित्त गहपति के जीवन के अनेकों अनुकरणीय प्रसंग मिलते हैं जो गहपति की धर्म में परिपक्वता को दर्शाते हैं। कई अवसरों पर चित्त गहपति ने भिक्षुओं को धर्म की बारीकियों का व्याख्यान किया। आयुष्मानगण उसका अनुमोदन कर यही कहते – "गहपति! तुम बड़े भाग्यवान हो कि तुमने भगवान के इतने गंभीर धर्म को अपनी प्रज्ञा से जाना है।"